जल-स्तुति

डॉ योगेन्द्र नाथ शर्मा 'अरूण'
पूर्व प्राचार्य एवं सदस्य कार्य परिषद,
हे0न0ब0 गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर

जग-जीवन का आधार है जल !
जल बिना नहीं जीवन-संबल !!

हैं रूप अनेक यहाँ जल के,
द्रव रूप में जीवन सा बरसे !
हिम रूप बना जल जमने से,
बन गया वाष्प जल जलने से !!

जलता है जल जब, वाष्प बने,
ठंडक जो मिले, बरसात बने !
बढ़ जाए ठण्ड जब और अधिक,
बरसात स्वयं हिमपात बने !!

करता है कैसे खेल यह जल !
जग-जीवन का आधार है जल !!

फिर ताप बढ़ा गर्मी आई,
हिम से जलधार बनी भाई !
फिर घिरी घटा, चमकी चपला,
रिमझिम -रिमझिम वर्षा आई !!

जल प्यास बुझाने जब आया,
धरती का कण-कण हर्षाया !
धरती के भीतर पहुँचा जल,
अंकुर बन जीवन मुसकाया !!

यों जीवन बन जाता है जल !
जल बिना नहीं जीवन संबल !!

जल फैला धरती के कण में,
रुक गया शिलाओ बीच कहीं !
फिर निकला जल निर्झर बनकर,
पाताल फोड़ कर कुँआ कहीं !!

जब धरती रसमय हो आई,
जल ऊपर ही तब बह निकला !
एकत्र हुआ फिर यहाँ - वहाँ ,
सरिताओं, झीलों में जल बदला !!

नित रूप बदलता है यूं जल !
जग-जीवन का आधार है जल !!

नदियों पर बाँध बांध कर फिर,
मानव ने जल को रोक लिया !
जग-जीवन हो मंगलकारी,
यों जल का नित उपयोग किया !!

पन चक्की चलीं इसी जल से,
बिजली घर - घर में पहुँचाई!
बुद्धि से जल बन गया स्वर्ण
उद्योगों में नव गति आई !!

बहुमुखी विकास करता है जल!
जल बिना नहीं जीवन संबल !!

खेतों को हरियाली देकर,
जल ने ही जग को प्राण दिए!
नदियों को गति दी है जल ने
तीर्थों को पावन नाम दिए !!

नदियों से विघुत -शक्ति मिली,
जल से ही खुशहाली आई!
भारी लकड़ी के लठ्ठों को,
जल-धार बहा कर ले आई !!

यों शक्ति बना है शीतल जल !
जग -जीवन का आधार है जल !!

जल-तल नीचा, तो फसल सूखी,
ऊंचा तल हुआ, तो फसल सड़ी !
जल का उपयोग किया ढंग से
मानव को मिली समृद्धि बड़ी !!

नल बना-बना कर शहरों में,
मानव की प्यास बुझाता जल !
रोगों से मुक्ति दिलाने का,
सुन्दर साधन बन जाता जल !!

ईश्वर का है वरदान यह जल !
जल बिना नहीं जीवन-संबल !!

जल का रिश्ता तो मानव से,
उल्टे अनुपात में होता है !
जनसंख्या ज्यों - ज्यों बढ़ती है,
जल का अभाव त्यों होता है !!

जल का उपयोग करे मानव,
तो जीवन में रसधार बहे !
जल को बेकार गंवाया तो,
मानव सचमुच लाचार रहे !!

सच्ची प्रगति का सार है जल !
जग-जीवन का आधार है जल !!

जल को नहीं व्यर्थ करे कोई,
जल का संरक्षण धर्म बने !
जल की महिमा समझाना ही,
मानव का सुन्दर कर्म बने !!

जल है पूजा, जल है भक्ति,
जल ईश्वर का वरदान सदा !
मानव-जीवन का मूल तत्व,
जल है शक्ति का नाम सदा !!

धरती का प्राणाधार है जल !
जल बिना नहीं जीवन संबल !!

मानव-जीवन में इस जल का,
ऊंचा ही रहा स्थान सदा !
हर पल, हर क्षण, इस जल से ही,
मानव पाता सम्मान सदा !!

इस जल की पूजा करनी है,
इस जल से जीवन पाना है !
शक्ति के स्रोत 'ब्रह्म-जल' से,
पीड़ित को त्राण दिलाना है !!

परमेश्वर का ही सार है जल !
जल बिना नहीं जीवन-संबल !!